हिन्दी विभाग
स्नातकोत्तर द्वितीय सत्रार्द्ध
पत्र संख्या - 10

प्रसाद की सांस्कृतिक दृष्टि पर प्रकाश डालें।

जयशंकर प्रसाद हिन्दी के उन कवियों में अग्रगण्य हैं जो भारतीय संस्कृति के पोषक एवं उद्गाता हैं। उनकी रचनाओं में उनकी सांस्कृतिक दृष्टि अभिव्यक्त हुई है। प्रसाद की नाट्यकृतियाँ पौराणिक युग से लेकर हर्षवर्धन युग तक के भारतीय इतिहास के स्वर्णिम एवं गौरवमयी कालखंड पर आधृत हैं तथा इनकी कृतियों में भारतीय संस्कृति की शक्ति एवं औदात्य का भास्वर चित्र प्रस्तुत किया गया है। अपने ऐतिहासिक नाटकों में उन्होंने ऐसे चरित्र प्रस्तुत किये जिनमें भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों का सन्निवेश है तथा भारत के अतीत गौरव के सार्थक चित्र हैं।

भारतीय तत्व के मूल तत्व हैं- आध्यात्मिकता, समन्वयशीलता, विश्वबंधुत्व, कर्मण्यता, साहस, नैतिकता, संयम, त्याग और बलिदान, देशभक्ति एवं राष्ट्रीयता। प्रसाद के नाट्य साहित्य में, कथा साहित्य में तथा काव्य रचनाओं में भारतीय संस्कृति के इन तत्वों का समावेश हुआ है। चन्द्रगुप्त नाटक में चाणक्य, चन्द्रगुप्त, अलका, सिंहरण जैसे आदर्श पात्र हैं, जो कर्मण्यता, साहस, देशभक्ति की प्रेरणा देते हैं।

प्रसाद के नाटकों में प्राचीन जीवन मूल्यों, भारत का अतीत गौरव सांस्कृतिक दृष्टि, देश प्रेम, नवजागरण नारी के प्रति सम्मान एवं स्वदेशाभिमान का चित्रण उपलब्ध होता है।

प्रसाद के काव्य संग्रह 'लहर' में संकलित 'शेरसिंह का शस्त्र समर्पण' तथा 'पेशोला की प्रतिध्वनि' ऐसी ही कविताएँ हैं जिनमें राष्ट्रीयता एवं सांस्कृतिक मूल्य उभरकर सामने आए हैं।

प्रसाद द्वारा रचित 'महाराणा का महत्व' कविता भी सांस्कृतिक चेतना से युक्त है। प्रसाद जी ने अपनी कहानियों में भी सांस्कृतिक मूल्यों का संदेश दिया है। पुरस्कार नामक कहानी में मधूलिका व्यक्तिगत प्रेम को राष्ट्रप्रेम पर कुर्बान कर देती है। कामायनी में भी आध्यात्मिकता, विश्वबन्धुत्व, समरसता एवं समन्वयवाद का जो संदेश दिया गया है, वह भारतीय संस्कृति के अनुकूल है।

उक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रसाद के काव्य में भारतीय संस्कृति से जुड़े हुए जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति हुई है।

प्रस्तुतकर्त्ता
बैनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
मो० नं०— 8292227104

दिनांक
01/11/2020